मई: 2023

वर्ष : 6 अंक : 8

सिफरी मासिक समाचार

जो कुछ हमारा है वो हम तक तभी पहुंचता है जब हम उसे ग्रहण करने की क्षमता विकसित करते हैं।

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का मई 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

इस माह अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म (7 मई, 1861, बंगाली कैलेंडर के अनुसार बैसाख माह की 25वीं तिथि) हुआ था। गुरुदेव वर्ष 1913 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाले पहले गैर-यूरोपीय लेखक थे जिन्हे लंदन में प्रकाशित अपने संग्रह गीतांजलि के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी शिक्षा-दीक्षा संपूर्णतः घर के प्रांगण में ही हुई और उन्होने वेदों, उपनिषदों तथा विश्व की श्रेष्ठ रचनाओं का अध्ययन किया। गुरुदेव ने लगभग 30-40 गद्य तथा लगभग 40-50 पद्य विधाओं में रचनाएँ कीं। यदि उनकी रचनाओं को देखा जाय तो साहित्य हो या जीवन, सभी रंगों और पहलूओं को उन्होने अपनी लेखनी में समाहित किया है।

इस माह में दूसरा अंतर्राष्ट्रीय उत्सव है- 'मदर्स दे' अर्थात यह विशेष दिन माताओं को समर्पित होता है। वैसे देखा जाय तो किसी व्यक्ति के जीवन और उसके चरित्र निर्माण में एक माता का की भूमिका अभिन्न तथा पथ-प्रदर्शक के समान होता है जिसे केवल कुछ शब्दों में बयान करना या कोई एक दिवस समर्पित करना लगभग एक असंभव काम है।

प्रस्तुत अंक में संस्थान में अप्रैल 2023 माह की गतिविधियों और उपलब्धियों के साथ संस्थान द्वारा मणिपुर के मापीथेल जलाशय में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों का पेन में पालन के सफलतम प्रयास को दिखाया गया है।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

मणिपुर के मापीथेल जलाशय में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों का पेन में पालन का सफलतम प्रयास

जनजातीय मछुआरों ने पेन कल्चर तकनीक का उपयोग करके आईएमसी फिंगरलिंग पालन का प्रदर्शन किया: एक कहानी

मणिपुर राज्य भारत के सबसे पूर्वी छोर पर स्थित है और राज्य की लगभग 41 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजाति की है। इस राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है जिसका राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 50-60 प्रतिशत का योगदान है। मणिपुर में जल संसाधन क्षेत्र झीलों, आर्द्रभूमि, तालाबों, जल-जमाव वाले क्षेत्र, नदियों, नालों और जलाशयों के रूप में पाये जाते हैं। यहाँ कुल जलक्षेत्र का केवल 32.94 %

भाग में ही अब तक मत्स्य विकास किया जाता रहा है। हालाँकि वास्तविक तौर पर मणिपुर की 95 प्रतिशत से अधिक लोग मछली खाते है इसलिए आपूर्ति के लिए अच्छा मछली उत्पादन होने के बावजूद, देश के अन्य राज्यों से मछली का आयात करना पड़ता है।

मणिपुर का मापिथेल बांध, जिसे मेफौ बांध के नाम से भी जाना जाता है, इस राज्य के कामजोंग जिले में स्थित है। मणिपुर सरकार के सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण विभाग (IFCD) ने वर्ष 1980 में इस बांध परियोजना को शुरू किया था। इस राज्य में सबसे बड़ा जलाशय है जो लगभग 1100 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, इस बांध का 1285 हेक्टेयर क्षेत्र जलमग्न था और बांध निर्माण से लगभग 12000 से अधिक लोगों (16 गांवों के 1600 घर) विस्थापित हुये थे। इसके साथ अनुमानित तौर पर, 777.34 हेक्टेयर धान के खेत, 110.75 हेक्टेयर आवासीय क्षेत्र, 293.53 हेक्टेयर झूम खेती वाली भूमि और 595.1 हेक्टेयर वन्य क्षेत्र (आईएफपी, 2018) भी जलमग्न हो गए थे। यहाँ का प्राथमिक व्यवसाय कृषि था पर जलाशय निर्माण के बाद अधिकांशतः भूमि के जलमग्न होने के कारण यहाँ के लोग अन्य व्यवसायों में

जाने के लिए मजबूर हो गए। पर बांध निर्माण से सबसे अधिक प्रभावित तांगखुल जनजाति के लोग हुए। नवंबर 2016 में 370 सदस्यों के साथ "मैपीथेल बांध प्रभावित मात्स्यिकी सहकारी समिति" (मैपीथेल डैम अफेक्टेड फिशरी को-ऑपरेटिव सोसाइटी) नाम की एक सहकारी समिति पंजीकृत की गई थी पर वित्तीय अड़चनों के कारण मत्स्य विभाग, मणिपुर सरकार द्वारा अबतक केवल एक बार इस जलाशय में मछली संग्रहीत की गयी है। चूँकि इस क्षेत्र में विस्थापित लोगों के लिए मछली पकड़ना आजीविका का एक प्राथमिक स्रोत है इसलिए जलाशय में पर्याप्त मछली पकड़ने की सुविधा के लिए मछली स्टॉक वृद्धि अति आवश्यक है। इस दिशा में भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री) ने इस विस्थापित मछुआरों की आजीविका निर्वहन के लिए पेन में मछली पालन तकनीक को अपनाया है। संस्थान ने मापीथेल जलाशय के रामरेई गांव में एक जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें मछुआरों को जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही, इन मछुआरों के लिए दो पेन (0.01 हेक्टेयर) लगा कर उनमें स्टॉकिंग और मछली पालन के लिए 50,000 मछली बीज, 2 टन पेलेटे फीड (CIFRI CAGEGROW) और 10 मीटर लंबी एक मोटरयुक्त FRP नाव भी दिया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जलाशय के बांध प्रभावित आदिवासी समुदाय की आजीविका में मत्स्य वृद्धि कार्यक्रम के माध्यम से सुधार करना था। जलाशय में पेन कल्चर गतिविधि शुरू करने से पहले, संस्थान ने 22-28 जुलाई 2022 के दौरान 14 आदिवासी मछुआरों को "उत्पादन वृद्धि के लिए जलाशय मत्स्य प्रबंधन" पर संस्थान मुख्यालय में प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम में मापीथेल जलाशय में दो पेन क्षेत्र (100 वर्ग मीटर क्षेत्र) लगाए गए और बाढ़/ मानसून के दौरान मछलियों के पलायन को रोकने के उपाय भी किए गए जो जलवायु-स्मार्ट अनुकूलन प्रणाली को दिखाता है। सार्वजनिक-निजी (पीपीपी) मोड में इंडियन मेजर कार्प (आईएमसी) प्रजातियों का स्टॉक और प्रबंधन किया गया। इसके अंतर्गत लेबीओ कतला (18.28±0.23 ग्राम), लेबीओ रोहिता (5.2±0.12 ग्राम), सिरहीनस मृगला (5.5±0.08 ग्राम) को पेन क्षेत्र में 250 मछली प्रति वर्ग मी॰ की दर से 2:1:1 के अनुपात में प्रत्येक प्रजाति को दो पेन में स्टॉक किया गया। इन पालित मछलियों को उनके शरीर भार का 2-3 प्रतिशत की दर से दिन में दो बार पैलेट आहार (CIFRI CAGEGROW Feed) खिलाया गया और सितंबर 2022 से जनवरी 2023 तक 5 महीने पाला गया। पालन अवधि के अंत में एल. कतला, एल. रोहिता और सी॰ मृगला का वजन औसतन क्रमशः 283.13±1.70 ग्राम, 186.26±47.02 ग्राम, और 116.00±0.87 ग्राम दर्ज किया गया। इन मछलियों की उत्तरजीविता 80 से 88 प्रतिशर तक देखी गई। एल कतला, एल रोहिता और सी मृगला की विशिष्ट वृद्धि दर (एसजीआर) क्रमशः 1.82, 2.56 और 2.03 तथा प्रजाति-विशिष्ट शुद्ध मछली उत्पादन क्रमशः 2601 किग्रा, 898.8 किग्रा और 546 किग्रा दर्ज किया गया। इसके बाद पेन क्षेत्रों से मछलियों को जलाशय में छोड़ा गया जो विस्थापित आदिवासी मछुआरों के आजीविका विकास की दिशा में एक संबल साबित हुआ है।

यह तकनीक सहकारी समिति के 370 मछुआरों के लिए पहल थी, जिसमें दो पेन क्षेत्रों से 8.1 टन मछली का उत्पादन किया गया। अंततः इस जलाशय से एक वर्ष में 36 टन उत्पादन किया जा सकता है जिससे अतिरिक्त औसत आय रु. 24,000 प्रति मछुआरा (रु. 250 प्रति किग्रा) प्राप्त हो सकता है। संस्थान द्वारा पेन पालन तकनीक का प्रदर्शन मछुआरों के लिए एक वरदान साबित हुआ है जिससे आने वाले वर्षों में जलाशय उत्पादन बढ़ाने के लिए इसे लागू किया जा सकता है।

6 अप्रैल, 2023 को गंगासागर में हिलसा और डॉल्फिन संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजन

गंगासागर में 6 अप्रैल, 2023 को गंगा डॉल्फिन और हिलसा संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस संवेदीकरण कार्यक्रम में कुल 71 (n=71) मछुआरों और स्थानीय लोगों ने भाग लिया। नमामि गंगे (एनएमसीजी) परियोजना के प्रधान अन्वेषक (पीआई) डॉ. बि.के. दास के मार्गदर्शन में कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता नमामि गंगे (एनएमसीजी) परियोजना के सहायक अन्वेषक डॉ. ए.के. साहू, और डॉ. डी.के. मीना और वरिष्ठ सलाहकार डॉ. संदीप बेहरा ने लोगों को जागरूक करते हुए किया। अपने भाषण में डॉ. डी.के. मीणा ने मछुआरों को गंगा प्रदूषण के प्रति जागरूक किया, मछली पकड़ने के लिए मच्छरदानी का प्रयोग न करने की सलाह दी। डॉ. ए.के. साहू ने मछुआरों को छोटी हिलसा को न पकड़ने के बारे में जागरूक किया और उनसे अनुरोध किया कि वे छोटे आकार के जाल का उपयोग न करें। उन्होंने उन्हें ब्रीडिंग के समय हिलसा पकड़ने के लिए प्रतिबंध रखने की भी सलाह दी। उन्होंने उन्हें गंगासागर क्षेत्र के आसपास की नहरों को पुनर्जीवित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया, जहां कभी हिलसा पाई जाती थी। वरिष्ठ सलाहकार डॉ. बेहरा ने स्थानीय लोगों को डॉल्फिन संरक्षण के बारे में जागरूक किया और माँ गंगा में प्रदूषण को कम करने पर इसके प्रभाव का उल्लेख किया। उन्होंने निर्मल गंगा, अबीरल गंगा, अर्थ गंगा, ज्ञान गंगा और जन गंगा अवधारणा पर भी जोर दिया।

उत्तर प्रदेश के फतेहपुर और मिर्जापुर में भाकृअनुप - किफरी द्वारा 'राष्ट्रीय रैनचिंग कार्यक्रम 2023' के तहत भारतीय प्रमुख कार्प का रैनचिंग

भारत नदियों और संबंधित जल निकायों जैसे नदियों, आर्द्रभूमि, जलाशयों. झीलों, और आर्द्रभूमि के रूप में विशाल अन्तर्स्थलीय संसाधनों से समृद्ध है। गंगा भारत की सबसे बड़ी और सबसे पूजनीय नदी है। यह बड़ी संख्या में व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछली प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है। इंडियन मेजर कार्प *जिबेलियन कटला, लेबियो रोहिता, सिरिनस मृगाला*, और *लेबियो कैलबासु* एक बेशकीमती मात्स्यिकी का समर्थन करते हैं, जिसका मत्स्य पकड़ में सबसे ज्यादा योगदान है। हालांकि, इन प्रजातियों की पकड़ प्रवृत्ति ने गंगा नदी में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई है। मछली पकड़ में यह गिरावट आवास संशोधन, अत्यधिक मत्स्यन, विदेशी मछलियों के आक्रमण, प्रदूषण और अन्य मानवजनित गतिविधियों के कारण है। गंगा नदी में आईएमसी का संवर्द्धन उनके प्रभाव के संरक्षण और पुन: संचयन के लिए आवश्यक है। इसलिए, आईसीएआर-सिफरी द्वारा नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (एनएमसीजी) के तहत रेंचिंग का राष्ट्रीय फ्लैगशिप कार्यक्रम गंगा नदी में आईएमसी के संरक्षण के लिए नियंत्रित प्रजनन तकनीक के माध्यम से शुरू किया गया है।

भाकृअनुप - केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अब तक गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में भारतीय प्रमुख कार्प के 60 लाख से अधिक अंगुलिमीन छोडे। सिफरी ने नेशनल रिवर रेंचिंग प्रोग्राम 2022 के तहत गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में भारतीय प्रमुख कार्प के लगभग 2.0 मिलियन उन्नत अंगुलिमीन छोड़े हैं। इस वर्ष फिर से'राष्ट्रीय रैनचिंग कार्यक्रम 2023' के तहत 2.2 मिलियन से अधिक अग्रिम अंगुलिकाओं को विभिन्न स्थानों पर गंगा में छोड़ने के लिए लक्षित किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत, 02 अप्रैल 2023 को भाकृअनुप - केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा 40,000 भारतीय मेजर कार्प अंगुलिकाओं को गंगा नदी के फतेहपुर में छोड़ा गया। मुख्य अतिथि श्री जी.सी. यादव, सहायक निदेशक मत्स्य पालन, फतेहपुर, उ.प्र. और श्री राजेश शर्मा, सह-संयोजक, गंगा विचार मंच, काशी प्रांत, एनएमसीजी, डॉ. धर्म नाथ झा, केंद्र के प्रभारी, आईसीएआर-सिफरी, प्रयागराज और स्थानीय मछुआरे इस अवसर पर उपस्थित थे। फिर, 11 अप्रैल 2023 को, भाकृअनुप - केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा मिर्जापुर में बीस हजार भारतीय मेजर कार्प मछली अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अभिषेक वर्मा, मत्स्य विकास अधिकारी मिर्जापुर, उ.प्र.,

श्री राजेश शर्मा, सह-संयोजक, गंगा विचार मंच, काशी प्रांत, एनएमसीजी; डॉ. धर्म नाथ झा, केंद्र प्रभारी, भाकृअनुप-सिफरी, प्रयागराज और स्थानीय मछुआरे उपस्थित थे। दोनों अवसरों पर, केंद्र के प्रभारी डॉ. धर्म नाथ झा, आईसीएआर-सिफरी, प्रयागराज ने श्रोताओं को नमामि गंगे परियोजना और मछली विविधता को बहाल करने और संरक्षित करने के लिए संस्थान के काम के बारे में बताया। मुख्य अतिथियों ने गंगा नदी के महत्व, नदी में रैनचिंग और नदी की मछली के बारे में बताया और साथ ही भविष्य के लिए इसे कैसे संरक्षित किया जाए, इसके बारे में भी बताया। श्री राजेश शर्मा ने श्रोताओं को गंगा नदी के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम के महत्व के बारे में जानकारी दी।

संस्थान द्वारा पश्चिम बंगाल के सिंदरानी आर्द्रभूमि में 'मछली का रोग निरीक्षण और स्वास्थ्य प्रबंधन' पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप-सिफरी ने संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में दिनांक 13 अप्रैल 2023 को पश्चिम बंगाल के सिंदरनी आर्द्रभूमिमें 'मछली का रोग निरीक्षण और स्वास्थ्य प्रबंधन' पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। सिंदरानी घोड़े की नाल के आकार के समान एक आर्द्रभूमि है, जिसका क्षेत्रफल 46 हेक्टेयर है जो इच्छामती नदी से अलग होकर बनी है। आर्द्रभूमि का प्रबंधन सिंदरनी मछुआरा सहकारी समिति द्वारा किया जाता है, जिसमें 271 मछुआरें हैं। इस कार्यक्रम में रोग निगरानी और मछली के स्वास्थ्य प्रबंधन की स्थिति के साथ भारत में मीठे पानी के जलीय कृषि में जलीय पर्यावरण बनाम रोगाणुरोधी प्रतिरोध मुददें, जलीय कृषि विकास के लिए स्थायी दृष्टिकोण सहित कई पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। संस्थान की टीम ने मछली पालन पर मछुआरों को प्रेरित किया और विभिन्न मत्स्य पालन विधियों के लाभकारी प्रभाव जैसे, आर्द्रभूमि से उत्पादन बढ़ाने के लिए पेन में मछली पालन पर चर्चा की गयी। वैज्ञानिक दल तथा मछुआरों के पारस्परिक संवादात्मक बैठक में मछलियों का विकास तथा रोग और कृषि प्रबंधन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में 28 पुरुष और 2 महिलाओं सहित कुल 30 मछुआरों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मछुआरों को मत्स्य रोग की पहचान, उनके संभावित निदान एवं प्रबंधन उपायों और मछली फार्म के बेहतर प्रबंधन के लिए जागरूक करने के लिए प्रतिभागियों को अंग्रेजी और बंगाल में पैम्फलेट वितरित किया गया। NSPAAD परियोजना से जुड़े डॉ. विकास कुमार, वैज्ञानिक और शोधार्थियों ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

नमामि गंगे के महानिदेशक द्वारा पचास हजार मत्स्य बीज को कानपुर में गंगा नदी में छोड़ा गया

राष्ट्रीय नदी रैंचिंग कार्यक्रम 2023 के अवसर पर गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद -केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा आज दिनांक 17 अप्रैल 2023 को, कानपुर के अटल घाट पर गंगा नदी में 50000 (पचास हजार) भारतीय प्रमुख कार्प-कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग सह जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ बि॰ के॰ दास ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। उन्होने कहा कि इस वर्ष गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के 22 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जी अशोक कुमार, महानिदेशक, एनएमसीजी, नई दिल्ली ने इस अवसर पर गंगा को स्वच्छ रखने एवम जैव विविधता को बचाने के लिए नमामि गंगे परियोजना के अन्तर्गत किए गए विभिन्न कायों के बारे में जानकारी दी । अतिविशिष्ट अतिथि डॉ॰ विजय लक्ष्मी सक्सेना, अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था ने लोगो को गंगा के महत्व को बताया तथा इसे स्वच्छ रखने के लिए आह्वान किया। इस अवसर पर अन्य अतिथिगण जैसे डॉ॰ यू के सरकार निदेशक, एन. बी.एफ. जी. आर., डॉ॰ नुरुल हक, मत्स्य उप निदेशक, उ प्र, आदि ने जैव विविधता और मछलियों के बारे में जागरूक किया तथा गंगा को साफ रखने के लिए के लिए कहा ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में केंद्र प्रभारी डॉ॰ धर्म नाथ झा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में आस-पास गाँव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया। अन्त में संस्थान के वैज्ञानिका डॉ अबसार आलम ने औपचारिक धन्यवाद दिया । कार्यक्रम में प्रयुक्त मत्स्य बीज का रख रखाव एवं व्यवस्था संस्थान के वैज्ञानिक डा॰ वी आर ठाकुर एवं अन्य अधिकारियों और शोधार्थीयों ने किया।

मधेपुरा, बिहार के मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक उन्नयन के लिए कौशल विकास कार्यक्रम

बिहार का मधेपुरा क्षेत्र मत्स्य संसाधनों में समृद्ध हैं, पर मछुआरों में कौशल और दक्षता की कमी के कारण मछली का उत्पादन कम होता है। इसे ध्यान में रखकर भाकृअनुप-सिफरी ने दिनांक 04-10 अप्रैल, 2023 को संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में मधेपुरा के मछली किसानों के लिए एक 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" का आयोजन किया। इसके अंतर्गत किसानों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के साथ संसाधन उपयोग के अनुकूलन की क्षमता विकसित करना तथा वैज्ञानिक मत्स्य उत्पादन प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 किसानों को शामिल किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान, संस्थान के निदेशक डॉ.

बि.के. दास ने किसानों को अद्यतन वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने और अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जो उन्हें रोजगार और आजीविका सुरक्षा में मदद करेगा। उन्होंने मधेपुरा के मछली पालकों को उपलब्ध विशाल अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के समुचित उपयोग की आवश्यकता के साथ प्रशिक्षुओं को देश के अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में उपलब्ध नए उद्यमिता के अवसरों के बारे में भी जानकारी दी।

इस जिले में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के माध्यम से आजीविका में बहुत कुछ सुधार किया जा सकता है। कार्यक्रम में तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और जल रसायन, प्रेरित प्रजनन, नर्सरी, पालन और ब्रूडर पालन हेतु तालाब प्रबंधन, समग्र मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, पिंजरे में मछली पालन; मछली चारा प्रबंधन, रोग प्रबंधन आदि पर इन-हाउस सत्र शामिल थे। उद्यमिता, विपणन और आर्थिक मूल्यांकन, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना आदि पर अवलोकन के अलावा, किसानों को सिफरी के उत्पादों और प्रौद्योगिकियों पर वृत्तचित्र, री-सर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), बायो-फ्लोक इकाइयों, संस्थान की सजावटी हैचरी इकाइयां और फीड मिल शामिल हैं। किसानों को जल गुणवत्ता मूल्यांकन, मछली चारा तैयार करने, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान भाकृअनुप-सीफा, कल्याणी के मछली फार्म; कलना, पूर्वी बर्दवान; पूर्वी कोलकाता वेटलैंड (ईकेडब्ल्यू); सजावटी मछली बाजार आदि ले जाया गया। फीडबैक सत्र को प्रशिक्षुओं के ज्ञान के अपस्केलिंग को स्वीकार करने की समग्र संतुष्टि के साथ चिह्नित किया गया था जिसे उनके संबंधित जल संसाधनों में लागू किया जाएगा। समापन सत्र में किसानों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन डा. ए.के. दास तथा डा. विकास कुमार ने बड़ी कुशलता से किया।

पश्चिम बंगाल के आर्द्रभूमि में "अंतर्स्थलीय खुलाजल मत्स्य पालन में ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन" पर जागरूकता कार्यक्रम

अंतर्स्थलीय खुलाजल के अंतर्गत नदियां, जलाशय और आर्द्रभूमि आते हैं पर वर्तमान में ये जल संसाधान क्षेत्र मत्स्य पालन के लिए उपयुक्त जल की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। मात्स्यिकी उत्पादन के लिए गुणवत्तापूर्ण जल स्वास्थ्य प्रबंधन एक महत्वपूर्ण पहलू है जो मछलियों को रोग मुक्त रहने, अच्छी वृद्धि और उत्तम गुणवत्ता वाले आवास को बनाए रखने में मदद करता है। अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन मुख्य रूप से मछली रोगजनकों, मछली रोग, मैक्रोफाइट संक्रमण, विभिन्न स्रोतों से प्रदूषकों के जल की गुणवत्ता ह्रास से पीड़ित हैं। मछुआरें आमतौर पर जल निकायों के उपचार के लिए कीटाणुनाशक, कीटनाशकों का छिड़काव करते हैं जिसकी लागत मूल्य अधिक होता है। इसे ध्यान में रख कर, स्वचालित स्प्रेयर ड्रोन स्मार्ट के कारण समय, आदान और लागत में कमी आएगी।

अतः इस तकनीक के बारे में मछुआरों को जागरूक करने के लिए, सिफ़री, बैरकपुर ने दिनांक 11-13 अप्रैल, 2023 को पश्चिम बंगाल के तीन आर्द्रभूमि, चामता (दिनांक 11 अप्रैल, 2023), खोलसे (दिनांक 12 अप्रैल, 2023), और सिंदरनी आर्द्रभूमि (दिनांक 13 अप्रैल, 2023), में "अंतर्स्थलीय खुलाजल मत्स्य पालन में ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन" पर तीन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इन जागरूकता कार्यक्रमों का उद्देश्य किसानों को मछली पालन प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम में, ड्रोन प्रणाली का मत्स्य पालन क्षेत्र में

अनुप्रयोगों के बारे में जानकारी देने के साथ जलस्रोतों के ऊपर उड़ने के लिए एग्री-ड्रोन प्रणाली संचालित की गई और जलक्षेत्र में कीटाणुनाशक का छिड़काव किया गया। श्रीमती चायना जाना, वैज्ञानिक और परियोजना समन्वयक ने किसानों के साथ इस प्रौद्योगिकी के लाभों के बारे में चर्चा की। मछुआरों ने भी विशेष रूप से मैक्रोफाइट नियंत्रण, कीटनाशक और कीटाणुनाशक छिड़काव के लिए अपनी मछली पालन में प्रणाली का उपयोग करने में रुचि दिखाई। इन तीन जागरूकता कार्यक्रमों में कुल 120 मछुआरें उपस्थित थे। यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास के मार्गदर्शन में आयोजित की गई।

नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत वाराणसी में गंगा नदी में दो लाख बारह हजार मत्स्य बीज छोड़े गए

भाकृअनुप-सिफरी द्वारा गंगा नदी में इंडियन मेजर कार्प (आईएमसी) प्रजातियों की दो लाख बड़ी अंगुलिकाओं को रैंचिंग कार्यक्रम के तहत वाराणसी के संत रविदास घाट में छोड़ा गया। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. बी.पी. मोहंती, सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) थे। इस अवसर पर आईएमसी मछलियों की मछली विविधता के पुनरुत्थान और संरक्षण हेतु कतला, रोहू और मृगल मछलियों के बीजों को गंगा नदी में डाला गया जो गंगा नदी की मत्स्य विविधता को बनाए रखने में मदद करेगा।

राष्ट्रीय नदी रैंचिंग कार्यक्रम 2.0 के तहत देश के विभिन्न स्थानों पर गंगा नदी में बड़ी अंगुलिकाओं की 22 लाख से अधिक रैंचिंग होगी। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) परियोजना के तत्वावधान में आयोजित किया गया था जिसमें डॉ. बि के दास, निदेशक,

भाकृअनुप-सिफरी ने मछली विविधता के पुनरुत्थान और संरक्षित करने की सार्थकता और लक्ष्य के बारे में बताया। इस अवसर के विशिष्ट अतिथि डॉ. बी.पी. मोहंती, एडीजी (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) भाकृअनुप, नई दिल्ली ने समारोह को संबोधित करते हुए बताया कि मछलियां गंगा नदी और मानव दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस अवसर पर श्री संजीव कुमार, जिला वन अधिकारी; श्री अनिल कुमार, उप निदेशक, मत्स्य विभाग, उ.प्र.; कर्नल सुनील गुहानी, लेफ्टिनेंट, गंगा टास्क फोर्स ने भी संबोधित किया। उन्होंने नदी की मछलियों और गंगा को स्वच्छ रखने के तरीके और इनके भावी संरक्षण के तरीकों के बारे में विस्तार से बताया।

डॉ. धर्म नाथ झा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और आईसीएआर-सिफरी केंद्र के प्रभारी, प्रयागराज ने कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम में गंगा टास्क फोर्स, मत्स्य विभाग, गंगा विचार मंच, आसपास के गांवों के मछुआरें, मछली व्यापारी और गंगा के किनारे रहने वाले स्थानीय लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. वी. आर. ठाकुर वैज्ञानिक ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के संचालन में डॉ मितेश रामटेक, डॉ विकास कुमार, डॉ जीतेंद्र कुमार वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी और शोधार्थी शामिल थे।

निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु का दौरा किया

भाकृअनुप-सिफरी के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने दिनांक 12 अप्रैल 2023 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु का दौरा किया तथा केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक की। इस बैठक में निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया :

- निदेशक ने आईसीएआर वैज्ञानिकों की जवाबदेही और जिम्मेदारियों की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की। उन्होंने स्नातक पाठ्यक्रमों की आगामी क्लस्टरिंग और ईएचआरएमएस, ई-कृषि पोर्टल और डेटा रिपॉजिटरी के महत्व के बारे में भी चर्चा की।
- उन्होंने वैज्ञानिकों को अगले वित्तीय वर्ष के लिए योजना बनाने और 5 इम्पैक्ट फैक्टर वाली पत्रिकाओं में शोध लेख प्रकाशित करने, क्षेत्रीय भाषाओं में लोकप्रिय लेख और सफलता की कहानियां प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, आईसीएआर-सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रेशवाटर एक्वाकल्चर, बेंगलुरु के सहयोग से अंतर-संस्थागत सहयोग और खुले दिन/विचार-मंथन/मछली मेला आयोजित करने का सुझाव दिया गया।
- उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सभी आधिकारिक वित्तीय मामले टीएसए खाते के माध्यम से होते हैं, इसलिए लिए गए अग्रिम का पूरी तरह से उपयोग किया जाना चाहिए।
- केंद्र में समय-समय पर अनुसंधान समीक्षा बैठकें आयोजित की जाएंगी और 1962 में इसकी स्थापना के बाद से इस क्षेत्र में केंद्र की उपलब्धियों और प्रभावों का आकलन किया जाएगा।
- दिसंबर 2023 से पहले टीएसपी और एससी-एसपी कार्यक्रमों की योजना बनाई जाएगी और उन्हें क्रियान्वित किया जाएगा।

बैठक में नवीन अनुसंधान योग्य मुद्दों और प्रशासनिक मामलों पर चर्चा की गई।

अंत में, डॉ. प्रीता पणिक्कर प्रमुख (प्रभारी) ने केंद्र में गतिविधियों को और बेहतर बनाने के लिए निदेशक को उनके बहुमूल्य समय, समर्थन, मार्गदर्शन, प्रेरणा और सुझावों के लिए धन्यवाद दिया।

आईसीएआर ने गुवाहाटी में "पूर्वोत्तर पशुधन-एक्वा-पोल्ट्री एक्सपो, 2023 और सम्मेलन" में भाग लिया

दिनांक 18-20 अप्रैल, 2023 को P2C कम्युनिकेशंस, नई दिल्ली ने एक्वा पोस्ट और स्मार्ट एग्री पोस्ट मैगज़ीन के साथ मीडिया पार्टनर और सिफ़री के साथ एक नॉलेज पार्टनर के तौर पर मनीराम दीवान ट्रेड सेंटर, गुवाहाटी में "पूर्वोत्तर पशुधन-एक्वा-पोल्ट्री

एक्सपो, 2023 और सम्मेलन" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में संबंधित अनुसंधान संस्थान, निजी कंपनियां, एजेंसियां, लाइन विभाग, उद्यमी और अन्य संस्थाओं ने अपने उत्पादों और प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया। पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र से कुल 5000 से अधिक व्यक्तियों (महिलाओं और पेशेवर छात्रों सहित) ने प्रदर्शनी का दौरा किया और विचारों को साँझा किया।

इस एक्सपो के उदघाटन (18 अप्रैल, 2022) में श्री प्रवेश प्रधान, मुख्य संपादक, एक्वा पोस्ट और स्मार्ट एग्री पोस्ट मैगज़ीन ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। नॉलेज पार्टनर के रूप में, सिफ़री ने P2C कम्युनिकेशंस के साथ 20 अप्रैल, 2023 को "पूर्वोत्तर क्षेत्र में पशुधन, मत्स्य पालन, पोल्ट्री और डेयरी क्षेत्र में मूल्य श्रृंखला विकास

और निवेश के अवसर" विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें निजी और सरकारी क्षेत्र के अधिकारियों, शिक्षाविद, शोधकर्ता, छात्र, बैंकर, उद्योगपति, उद्यमी, पशुपालक, मछुआरे / मछली किसान और अन्य सहित 350 से अधिक हितधारकों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में पशुधन, मत्स्य पालन, पोल्ट्री और डेयरी क्षेत्रों के विभिन्न पहलुओं पर तकनीकी सत्र विचार-विमर्श किया गया। इसके बाद एक पैनल चर्चा और प्रश्न/उत्तर सत्र आयोजित किया गया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. एल. नरसिम्हामूर्ति, वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद ने सभा को संबोधित किया और मत्स्य क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। डॉ. वी. के. गुप्ता, निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय सुअर अनुसंधान केंद्र, गुवाहाटी ने क्षेत्र के पशुधन और कुक्कुट क्षेत्र से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। सिफ़री के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों, आजीविका और आय वृद्धि में उनकी भूमिका और सिफरी के वर्तमान प्रयासों के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान "पूर्वोत्तर भारत में मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षमता" पर एक्वा पोस्ट पत्रिका का एक विशेष अंक का विमोचन किया गया। श्री तगे ताकी, माननीय मंत्री, कृषि, पशुपालन, डेयरी और पशु चिकित्सा, मत्स्य पालन विभाग, अरुणाचल प्रदेश सरकार ने सभा को संबोधित किया और एक्सपो और सम्मेलन आयोजित करने के लिए आयोजक को

धन्यवाद दिया, जो इस क्षेत्र में अपनी तरह का पहला आयोजन है। उन्होंने उपस्थित लोगों से क्षेत्र के पशुपालन और मत्स्य पालन क्षेत्र के सतत विकास की दिशा में काम करने का भी आग्रह किया। यह कार्यक्रम श्री प्रधान के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ।

सिफरी के निदेशक ने 20-21 अप्रैल, 2023 के दौरान संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र का दौरा किया

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर, कोलकाता ने क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, गुवाहाटी की गतिविधियों की समीक्षा के लिए दिनांक 20-21 अप्रैल, 2023 के दौरान इस केंद्र का दौरा किया। बैठक में केंद्र के प्रमुख (कार्यवाहक) डॉ. बी.के. भट्टाचार्य के साथ सभी वैज्ञानिक, दो तकनीकी, दो प्रशासनिक और दो युवा पेशेवर तथा बैरकपुर मुख्यालय से डॉ. ए.के. दास, प्रमुख (प्रभारी), जलाशय और आर्द्रभूमि मत्स्य प्रभाग उपस्थित थे।

निदेशक ने सबसे पहले परिषद के महानिदेशक के संदेश को उद्धृत करते हुए सभी वैज्ञानिकों को उच्च

एवं प्रभावी उत्पाद, पेटेंट, प्रौद्योगिकी तथा शोध पत्र विकसित करने की दिशा में काम करने का सुझाव दिया। उन्होंने वरिष्ठ वैज्ञानिकों को बाह्य संगठनों से वित्त पोषित परियोजना प्रस्ताव पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया तथा पूर्वोत्तर राज्यों में संस्थान द्वारा किए गए विभिन्न जल निकायों और आजीविका विकास कार्य, विशेष रूप से पिंजरा और पेन पालन पर अनुसंधान परियोजनाओं / गतिविधियों संबन्धित रिपोर्ट/पत्रक/ फ़्लायर तैयार करने के लिए कहा। निदेशक महोदय ने शोधकर्ताओं को बैरकपुर, कोलकाता में आयोजित होने वाले इंडियन फिशरीज एंड एक्वाकल्चर फोरम (IFAF) 2024 और लखनऊ में होने वाले भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2024 के लिए शोध पत्र पर कार्य करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने केंद्र की विभिन्न प्रयोग-शालाओं और सुविधाओं का दौरा किया और कुछ प्रयोग-शालाओं के पुनर्निर्माण का सुझाव दिया।

संस्थान ने फरक्का, मुर्शिदाबाद में राष्ट्रीय पशुपालन कार्यक्रम और जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अपना दूसरा 'नेशनल रिवर रेंचिंग प्रोग्राम-2023' बड़े उत्साहपूर्वक मनाया। इस क्रम में संस्थान ने मत्स्य विकास के लिए उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत 2 अप्रैल से 31 मई तक कई जन जागरूकता अभियान और मछली पालन कार्यक्रम का आयोजन किया।

वर्तमान नमामि गंगे कार्यक्रम के उपलक्ष्य में 25 अप्रैल, 2023 को फरक्का, मुर्शिदाबाद में नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत रिवर रैंचिंग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिले के विभिन्न नामित अधिकारियों और स्थानीय मछुआरों द्वारा गंगा नदी में रोहू, कतला, मृगल और कैलबासु सहित भारतीय मेजर कार्प के 2.0 लाख अंगुलिकाओं (>10 ग्राम) को जल में छोड़ा गया। कार्यक्रम में एनटीपीसी, एफबीपी, जिला वन अधिकारी, राज्य मत्स्य पालन विभाग मुर्शिदाबाद, आईसीएआर-सीआईएसएच केवीके मालदह, और नमामि गंगे परियोजना के जिला परियोजना अधिकारी के कई अधिकारी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम के बाद एक जन जागरूकता अभियान किया गया जिसमें 71 से अधिक स्थानीय सक्रिय मछुआरे शामिल थे जहां उन्हें गंगा नदी संरक्षण और उनके महत्व के बारे में जागरूक किया गया। संस्थान के निदेशक तथा नमामि गंगे परियोजना समन्वयक, डॉ. बसंत कुमार दास ने पशुपालन के महत्व और मछली संरक्षण की दिशा में इसके लाभकारी प्रभावों पर प्रकाश डाला। डॉ दास ने

दैनिक जीवन में मां गंगा के महत्व पर प्रकाश डाला। विभिन्न गंगा तटों पर स्थानीय मछुआरों सहित समाज के सभी वर्गों के बीच सक्रिय भागीदारी देखी गई। मछलियों और डॉल्फ़िन के साथ-साथ हिल्सा मत्स्य पालन को बनाए रखने के लिए आवश्यक गंगा के स्वास्थ्य के महत्व के साथ-साथ गंगा नदी के घटते मछली स्टॉक के बारे में भी जन जागरूकता की गई। एफबीपी के महाप्रबंधक, श्री आर.डी. देशपांडे; एनटीपीसी के महाप्रबंधक श्री सतीश एस. एवं जिला मत्स्य अधिकारी, श्री संजय कुमार मिश्रा ने रैंचिंग के लाभकारी प्रभाव पर जोर दिया और स्थानीय मछुआरों को गंगा प्रदूषण के बारे में जागरूक किया। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रतिनिधि, डॉ. दीपक नायक ने स्थानीय मछुआरों को गंगा नदी की स्वदेशी मछलियों के संरक्षण और मच्छरदानी जाल और नदी के जल में विष मिलाना के जहर आदि जैसे विनाशकारी मछली पकड़ने के तरीकों का उपयोग न करने के लिए कहा। सिफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. अमिय कुमार साहू ने विभिन्न संगठनों के साथ मिलकर माँ गंगा को स्वच्छ बनाने और उसकी विविधता के पुनरुद्धार के लिए प्रयास करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने जलीय कृषि और मत्स्य पालन में रोगाणुरोधी प्रतिरोध के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

भाकृअनुप-सिफरी ने फरक्का में गंगा नदी में हिल्सा और कार्प के पिंजरा पालन का प्रदर्शन किया

सिफरी ने पहली बार फरक्का में गंगा नदी में वाइल्ड हिलसा के पोना मछलियों और इंडियन मेजर कार्प (आईएमसी) के पालन के लिए 16 मीटर व्यास और 8 मीटर गहराई के तीन गोलाकार पिंजरे स्थापित किए। पिंजरे को सिफ़री द्वारा डिजाइन किया गया था, जिसका उद्देश्य घेरे में हिल्सा ब्रूड मछलियों के स्टॉक विकास के साथ हिलसा के अभिगमन मार्ग का अध्ययन करना था। कुल 580 उन्नत पोना मछलियों (औसत भार 143.3±10.3 ग्रा) स्टॉक किए गए थे। इसके अलावा, ब्रूडर विकसित करने के लिए पिंजरों में 50,000 से अधिक आईएमसी अंगुलिकाएं (औसत भार 24.3±2.6 ग्रा) रखे गए थे। ये आईएमसी अंगुलिकाएं गंगा नदी से एकत्रित हैचरी नस्ल के ब्रूडर थे, इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि इनमें कोई आनुवंशिक संदूषण नहीं है। पिंजरों के अंदर और बाहर मछली के लिए जल वेग और अन्य महत्वपूर्ण मानक दर्ज किए गए। स्टाकिंग कार्यक्रम में फरक्का बैराज प्राधिकरण (एफबीए), एनटीपीसी, वन विभाग, मत्स्य विभाग, पश्चिम बंगाल, आईसीएआर-सीआईएसएच कृषि विज्ञान केंद्र,मालदह, नेहरू युवा केंद्र और नमामिगंगे परियोजना के जिला परियोजना अधिकारी उपस्थित थे।

डॉ. बि.के.दास ने हिलसा को उसके प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में पालने के लिए गोलाकार पिंजरों की जरूरतों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिलसा को हमारे देश के जल निकायों में पालन की दिशा में पहले कई प्रयास किए जा चुके हैं। पर गोलाकार पिंजरों में यह प्रयास अधिक संभव है क्योंकि हिलसा प्रवास के लिए जल वेग का स्तर बनाए रखा जा रहा है। डॉ. ए.के. साहू ने फरक्का बैराज अथॉरिटी (एफबीए), आईडब्ल्यूएआई और सीआईएसएफ के सभी अधिकारियों को उपयुक्त साइट चयन में शामिल होने और आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया।

आईसीएआर-सिफरी ने विश्व बौद्धिक संपदा (आई. पी.)दिवस मनाया

विश्व बौद्धिक संपदा दिवस, 2023 के अवसर पर, सिफ़री ने दुनिया भर की महिला अन्वेषकों, रचनाकारों और उद्यमियों के मनोभाव को उजगर किया और उत्साहित किया। भाकृअनुप-सिफरी की सभी महिला शोधकर्ताओं के अभिनव और रचनात्मक वैज्ञानिक कार्यों के परिदृश्य में दिनांक 26 अप्रैल, 2023 को ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड में "आईपी में महिलाएं: त्वरित नवाचार और रचनात्मकता" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान मुख्यालय बैरकपुर और गुवाहाटी, प्रयागराज, बेंगलुरु, वडोदरा, कोलकाता और कोच्चि के क्षेत्रीय केंद्रों के 150 वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी और शोधार्थी कार्यक्रम में भाग लिया।

गणेश चंद्र, प्रभारी, आईटीएमयू, भाकृअनुप-सिफरी ने अपने स्वागत भाषण में गणमान्य व्यक्तियों, डॉ. यू.के. सरकार, निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ तथा डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी का स्वागत किया। बैठक में उपस्थित वक्ता डॉ. पूनम जे सिंह, प्रभारी, आईटीएमयू, आईसीएआर-एनबीएफजीआर ने विश्व आईपी दिवस, मत्स्य विज्ञान में आईपी के महत्व और प्रासंगिकता पर चर्चा की।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने अपने उद्घाटन भाषण में अनुसंधान में नवाचारों और रचनात्मकता में महिला वैज्ञानिकों की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने देकर कहा कि माननीय सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर की इस बात पर जोर देते हुये कहा कि प्रत्येक वैज्ञानिक के पास कम से कम एक उत्पाद/प्रौद्योगिकी या पेटेंट होना चाहिए। एक महिला शोधकर्ता के रूप में पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन और अन्य माध्यमों से शोध निष्कर्ष और आईपी सुरक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए।

डॉ. यू.के. सरकार, निदेशक, आईसीएआर-एनबीएफजीआर ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे शोध की प्राथमिकताओं को अब पूर्ण आईपी सुरक्षा के साथ प्रौद्योगिकियों/उत्पादों को वितरित करने पर ध्यान देना चाहिए। हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि हमारी अनुसंधान प्रणाली दिशाहीन न हो जाय और आईपी संरक्षण और उत्पाद विकास अनुसंधान परियोजना का अंतर्निहित घटक होना चाहिए। युवा वैज्ञानिकों को अधिक नवाचार के साथ आगे आना चाहिए और देश को वैश्विक नवाचार सूचकांक में अपनी रैंकिंग बढ़ाने में मदद करनी चाहिए।

डॉ. पूनम जे. सिंह ने "आउट ऑफ बॉक्स: इनोवेशन एंड क्रिएटिविटी इन साइंस" विषय पर अपना मुख्य व्याख्यान दिया। उन्होंने युवा अन्वेषकों, रचनाकारों और उद्यमियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने, आय उत्पन्न करने, रोजगार सृजित करने और समुदाय और राष्ट्रीय विकास का समर्थन करके स्थानीय और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए बौद्धिक संपदा (आईपी) का उपयोग करने में मदद करने के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में महिलाएं अपनी कल्पनाशीलता, आविष्कारशीलता और कड़ी मेहनत से दुनिया को प्रभावित कर रही हैं, लेकिन उन्हें समृद्ध होने के लिए आवश्यक जानकारी, कौशल, संसाधन और समर्थन प्राप्त करने में अक्सर बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

डॉ. एस. के. मन्ना, प्रभारी, पीएमई, भाकृअनुप-सिफरी ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव दिया। विश्व आईपी दिवस समारोह इस संदेश के साथ कि "दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर स्थान बनाने के लिए अधिक से अधिक विचारों की आवश्यकता है" से समाप्त हुआ।

झारखंड के साहिबगंज में सिफरी द्वारा साठ हजार मछली के बीज की रैंचिंग

सिफ़री बैरकपुर, कोलकाता ने 26 अप्रैल 2023 को नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत ओझा टोली घाट, साहिबगंज, झारखंड में भारतीय प्रमुख कार्प (रोहू, कतला और मृगल) की साठ हजार मछलियों को छोड़ा।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, श्री शांतनु ठाकुर, माननीय राज्य मंत्री, बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार थे। डॉ. बि. के. दास निदेशक, सिफरी; श्री रामनिवास यादव, आईएएस, उपायुक्त, साहिबगंज जिला; श्री. मनीष तिवारी, आईएफएस, साहिबगंज के मंडल वन अधिकारी; श्री संजीव कुमार, सहायक निदेशक, अंतर्स्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण; श्री अशोक चौधरी, सचिव, झारखंड पूर्वी गंगा मछुआरा सहकारी समिति लिमिटेड, स्थानीय मछुआरों 100 से अधिक प्रतिभागियों के साथ उपस्थित थे।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि यह रैंचिंग "राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम 2023" का एक हिस्सा है, जिसमें हम गंगा नदी में देशी मछली के भंडार को पुनरुद्धार करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि मछली न केवल आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं बल्कि नदी प्रणाली की प्रदूषण स्थिति को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

श्री शांतनु ठाकुर, माननीय मंत्री ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में सिफरी और नमामि गंगे की पहल की प्रशंसा की और कहा कि रैंचिंग से न केवल किसानों को मदद मिलेगी बल्कि नदी को अपने पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने में भी मदद मिलेगी। माननीय मंत्री जी ने स्थानीय मछुआरों से जीरो मेश साइज नेट फिशिंग का प्रयोग न करने का भी अनुरोध किया। श्री. रामनिवास यादव, आईएएस, उपायुक्त; और श्री मनीष तिवारी, आईएफएस, मंडल वन अधिकारी ने सभा को संबोधित किया और कहा कि इस रैंचिंग से न केवल मछली की आबादी में वृद्धि होगी बल्कि डॉल्फिन जैसे अन्य जलीय जीवों को भी अपनी आबादी को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

सिफरी ने ग्लोकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड के साथ "आईसीएआर-सिफरी केजग्रो" फ्लोटिंग फीड के लाइसेंस समझौते पर हस्ताक्षर किया।

आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर, कोलकाता ने ग्लॉकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड के साथ दिनांक 27 अप्रैल 2023 को "सिफरी केजग्रो" फ्लोटिंग फिश फीड के प्रौद्योगिकी लाइसेंस समझौते पर हस्ताक्षर किए। सिफरी को केजग्रो फ्लोटिंग फिश फीड के निर्माण और बिक्री के लिए पांच साल की अवधि के लिए गैर-अनन्य लाइसेंस प्रदान करता है। व्यावसायीकरण की प्रक्रिया आईसीएआर की वाणिज्यिक शाखा एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के माध्यम से पूरी की गई।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, डॉ. प्रवीण मलिक, सीईओ, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड और श्री सरीफुल इस्लाम, प्रबंध निदेशक, ग्लॉकस एग्रोकेम प्रा. लिमिटेड, कोलकाता ने अपने संबंधित संगठनों की ओर से समझौते पर हस्ताक्षर किए।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, ने कहा कि पिछले पांच वर्षों में आईसीएआर-सिफरी ने सात तकनीकों का व्यावसायीकरण और लाइसेंस दिया है। यह तीसरी बार है जब एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रौद्योगिकी लाइसेंसिंग की सुविधा प्रदान की गई है। सिफरी केजग्रो फीड को 2023-2028 की अवधि से पांच साल की अवधि के लिए दूसरी बार लाइसेंस दिया गया है।

श्री सरीफुल इस्लाम ने कहा कि "ICAR-CIFRI Argcure" के बाद यह सिफरी से ग्लौकोस अग्रोकेम को लाइसेंस प्राप्त दूसरी तकनीक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भाकृअनुप-सिफरी के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी भविष्य में भी जारी रहेगी।

आईसीएआर-सिफरी केजग्रो® फ्लोटिंग फीड

सिफरी केजग्रो फ्लोटिंग फीड को पैनसियोनोडोनहाइपोफथाल्मस और कार्प मछली पालन के विकास चरणों के लिए विकसित किया गया। यह लक्षित प्रजातियों की पोषक तत्वों और ऊर्जा की आवश्यकता को सुनिश्चित करता है। भोजन के प्रोटीन और लिपिड स्तर को क्रमशः 28 % और 5 % पर बनाए रखा गया था ताकि विकास आवश्यकता के अनुरूप हो सके। फ़ीड 28-32°c सेन्टीग्रेड की तापमान सीमा में 1.2-1.4 की मांस रूपांतरण दर को सुनिश्चित करता है।

कटिहार, बिहार के किसानों के लिए सिफरी, बैरकपुर में ज्ञान और क्षमता में सुधार के लिए प्रशिक्षण का आयोजन

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर कटिहार, बिहार के किसानों के लिए दिनांक 18-24 अप्रैल, 2023 के दौरान संस्थान मुख्यालय में 7

दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ताकि मात्स्यिकी और जलीय कृषि के संबंध में कौशल विकास के माध्यम से क्षमता निर्माण किया जा सके। कटिहार में तालाब सहित पर्याप्त अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधन उपलब्ध हैं इसलिए इस जिले के मछली किसानों का कौशल उन्नयन की आवश्यकता है और इन मुद्दों को हल करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा गया है। कार्यक्रम का उद्घाटन में संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने किसानों से आग्रह किया कि वे पशु प्रोटीन के साथ ग्रामीण स्वास्थ्य को मजबूत करने के अलावा अतिरिक्त आजीविका अर्जित करने में मछली की पैदावार के अनुकूलन के लिए अपने कौशल और दृष्टिकोण को आकार देने में संस्थान में प्रशिक्षण अवधि का उपयोग करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कटिहार के विभिन्न प्रखंडों के 30 किसानों ने भाग लिया और उन्हें सजावटी मछली पालन, बायोफ्लोक

यूनिट, आरएएस, मछली फ़ीड की तैयारी, जल गुणवत्ता विश्लेषण, बेंथोस सहित जैविक जीवों की पहचान, मछली रोग की पहचान, पिंजरे और पालन पर सैद्धांतिक कक्षा व्याख्यान के लिए इन-हाउस प्रशिक्षण दिया गया इस के साथ तालाब प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, प्रजनन और हैचरी प्रबंधन, समग्र मछली पालन तकनीक और सजावटी मछली पालन पर जागरूक किया गया।

उन्हें सीफा के कल्याणी केंद्र, कलना में प्रगतिशील हैचरी, पूर्वी बर्दवान, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू), सजावटी मछली बाजारों आदि से भी अवगत कराया गया ताकि इस तरह के एक्सपोजर दौरों के माध्यम से अपने कौशल को बढ़ाने के लिए प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया जा सके। किसानों ने अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन और मछली पालन के तकनीकी और सामाजिक-आर्थिक पहलुओं के साथ बुनियादी घटकों के साथ इस तरह के जोखिम और समग्र डिजाइन और प्रशिक्षण को निष्पादित करने पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की है। समापन समारोह में, निदेशक ने किसानों को अपने अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के सतत उपयोग के लिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्राप्त ज्ञान को लागू करने के लिए कहा । प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. दास, प्रभारी, विस्तार और प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव काल में भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर में एफपीसी बैठक का आयोजन

किसानों का एक समूह जो कृषि उत्पादन और संबंधित गतिविधि में शामिल हैं और कृषि व्यवसाय संचालन के प्रबंधन के प्रति समान रूप से अग्रसर हैं, साथ मिलके वही एक किसान उत्पादक कंपनी बनाते हैं। यह समूह एक गाँव के किसानों का या कई गाँवों का हो सकता है। एफपीसी का मुख्य उद्देश्य किसान उत्पादक कंपनी (एफपीसी) नामक एक कंपनी के रूप में पंजीकरण करके कृषि व्यवसायों का निर्माण करना है। 29 अप्रैल, 2023 को देश के पूर्वी क्षेत्र में कार्यरत एक सक्रिय एनजीओ "सुंदरबन ड्रीम्स" के सहयोग से आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर में एक एफपीसी बैठक आयोजित की गई। बैठक का उद्देश्य अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के माध्यम से आजीविका वृद्धि पर एफपीसी सदस्यों की क्षमता का निर्माण करना था। कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन सत्र के साथ हुई, जिसके बाद तीन तकनीकी सत्र हुए: आय सृजन के लिए मत्स्य पालन; एफपीसी के लिए विपणन और वित्तीय रणनीतियाँ और एफपीसी का विकास और निगरानी।

डॉ. एम.वी. राव, आईएएस, अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल विद्युत नियामक आयोग ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई और डॉ. बी.के. चंद, संयुक्त निदेशक अनुसंधान, डब्ल्यूबीयूएएफएस ने सम्मानित अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास, के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने उल्लेख किया कि एफपीसी को छोटे पैमाने के उत्पादकों, किसानों के

समूह के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि उनके हितों की रक्षा की जा सके और अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन उनके लिए निवेश पर सुनिश्चित प्रतिफल प्राप्त करने के लिए एक उपयोगी उद्यम हो सकता है। विभिन्न एफपीसी से तीन महिलाओं सहित बारह किसानों को कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार दिया गया। डॉ. एम.वी. राव ने दर्शकों को संबोधित किया और उन्हें प्रोत्साहित किया, साथ ही किसानों को एफपीसी में सक्रिय रूप से काम करने के लिए प्रेरित किया । डॉ. बी.के.चंद ने एफपीसी में एक घटक के रूप में मछली पालन करने और इसे अन्य घटक के साथ एकीकृत करने के लिए किसान को प्रोत्साहित किया।

पहले तकनीकी सत्र में sइफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक प्रस्तुति दी। डॉ. एम.ए. हसन, विभागाध्यक्ष, सिफरी ने स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री के साथ मछली चारा उत्पादन के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. अरुण पंडित, प्रभारी एफईयू ने भी सभी को एफपीसी के बारे में जानकारी दी। अगले तकनीकी सत्र में भारतीय स्टेट बैंक की एक टीम ने वित्तीय पहलू और ऋण लेने की प्रक्रिया के बारे में चर्चा की। राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM), विनियमित विपणन, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA), सूक्ष्म, लघु और लघु मंत्रालय के विशेषज्ञ; मध्यम उद्यम, नेयोटीया विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि बैठक में उपस्थित थे और उन्होंने अपने अनुभव और विचार सांझा किए। प्रत्येक सत्र के बाद संवाद सत्र आयोजित किए गए। कार्यक्रम में 43 महिलाओं सहित कुल 180 किसानों ने भाग लिया जो 16 जिलों से और 44 एफपीओ से थे ।

सजावटी मछली पालन के माध्यम से पहाड़ी क्षेत्र के लोगों की आजीविका को मजबूत करना: भाकृअनुप-सिफरी की एक पहल

ग्रामीणों की आजीविका को बढ़ाने के लिए सजावटी मछली पालन एक आशाजनक उद्यम है। ग्रामीण लोग विशेष रूप से इस मछली पालन प्रणाली में शामिल महिलाएं, इसकी आसान पालन पद्धति और कम जगह की आवश्यकता के कारण, यहां तक कि घर के पिछवाड़े में स्थित तालाब का उपयोग कर एक आदर्श मत्स्य पालन तकनीक के रूप में इसे इस्तेमाल कर सकते है। PMSSY के माध्यम से, यह लोगों की सामाजिक आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में सहायक हो सकता है और अंततः एक बेहतर राष्ट्र के विकास में सहायक हो सकता है।

ग्रामीण पहाड़ी समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने की दृष्टि से, डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर - सिफरी के नेतृत्व में उनकी आजीविका को मजबूत करने के लिए सजावटी मछली पालन को बढ़ावा दे रहा है। इस पहल को जारी रखते हुए, संस्थान ने 28 अप्रैल से 1 मई 2023 के दौरान "पहाड़ी क्षेत्र में आय सृजन और आजीविका वृद्धि के

लिए अंतर्स्थलीय सजावटी मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 26 उम्मीदवार शामिल हैं, जिनमें दार्जिलिंग जिले के सितोंग, मंजू और मोंगू गाँव के 8 महिलाएँ भाग लिया है। इस प्रशिक्षण से पहले, दार्जिलिंग के विभिन्न हिस्सों में ग्रामीणों को सजावटी मछली पालन तकनीकों के बारे में जागरूक करने के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम और क्षेत्र प्रदर्शन पहले ही आयोजित किए जा चुके हैं और इस उद्देश्य के लिए 120 सजावटी संस्कृति इकाई वितरित की गई है।

यह 4-दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ग्रामीणों की आवश्यकता के अनुसार तैयार किया गया है, जिसमें व्यावहारिक प्रशिक्षण, कक्षा शिक्षण और सजावटी मछली बाजार का दौरा आदि शामिल किया गया है। उन्हें एक्वेरियम बनाना और एक्वास्कैपिंग, कम लागत वाली कृत्रिम फ़ीड तैयार करना, आम जीवित रहने वाले और अंडे देने वाली सजावटी मछलियों और उनके प्रजनन, रखरखाव और सजावटी इकाई की निगरानी आदि के बारे में सिखाया गया था। इस अभ्यास में उपयोग किए जाने वाले सजावटी मछली व्यापार, बाजार की स्थिति, मूल्य निर्धारण और अन्य सहायक उपकरण देखें। समापन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र के साथ अलंकारिक मत्स्य पालन नियमावली एवं सजावटी मत्स्य औषधियों का वितरण किया गया।

इस सत्र के दौरान, डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने लोगों को क्लस्टर आधार पर मिशन मोड दृष्टिकोण पर इस मछली पालन को जारी रखने और उनके लिए सीआईएफआरआई की मदद का आश्वासन देने की सलाह दी है। श्री सुजीत चौधरी, डॉ. अविषेक साहा और डॉ. श्रेया भट्टाचार्य के सहयोग से डॉ. लियानथुमलुआया और श्रीमती पी.आर. स्वैन द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- दुम्बुर जलाशय, त्रिपुरा का पिछले 20 वर्षों का औसत मछली उत्पादन 119 किग्रा/ हेक्टेयर/ वर्ष दर्ज किया गया है। इस जलाशय से वर्ष 1978-79 से 1992-93 की तुलना में वर्ष 2006-07 से 2021-22 के दौरान मछली उत्पादन में 257 % की वृद्धि दर्ज की गई जो उच्च स्टॉकिंग घनत्व के कारण हो सकता है। इस जलाशय में 55 मछली प्रजातियों की उपस्थिती देखी गई।
- देश के 8 छोटे जलाशयों (पश्चिम बंगाल में 5, ओडिशा में 2 और कर्नाटक में 1) के लिए संभावित मछली उत्पादन का अनुमान लगाया गया था, जो लगभग 419 -718 किग्रा/हेक्टेयर के बीच था। इस दिशा में तदनुसार प्रत्येक जलाशय के लिए स्टॉकिंग घनत्व 850 से 1500 अंगुलिका प्रति हे. का सुझाव दिया गया।
- नेत्रवती-गुरुपुर मुहाना की सतह तलछट के लिए कार्बन के अवशिष्टों के आकलन से पता चला कि इस खंड में कार्बन का स्तर उच्च है, जिससे यह कार्बन डाइ ऑक्साइड का उत्सर्जन अधिक होने की संभावना रहती है।
- अप्रैल 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग 15.55 टन था, जो अप्रैल 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 97.20 % वृद्धि को दर्शाता है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 27 अप्रैल, 2023 को आईसीएआर क्षेत्रीय समिति संख्या की XXVII बैठक में आभासी रूप से भाग लिया। क्षेत्रीय समिति V (RC-V), में पंजाब, हरियाणा और दिल्ली राज्य शामिल हैं।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 27 अप्रैल 2023 को ग्लॉकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता के साथ फिश फीड व्यावसायीकरण पर बी2बी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 3 मई, 2023 को नमामि गंगे परियोजना पर नई दिल्ली में आयोजित इस परियोजना की समीक्षा बैठक में आभासी रूप से भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 8 मई 2023 को नई दिल्ली में नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण की 94वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 22 मई 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र, कल्याण, पुरुलिया (पश्चिम) में 'पूर्वी भारत के छोटानागपुर पठार क्षेत्र का अवलोकन और क्षमता' पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

विविध

- पश्चिम बंगाल के बैरकपुर, बेलूर, त्रिवेणी और बालाघाट में राष्ट्रीय नदी पशुपालन कार्यक्रम के तहत पशुपालन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें नदी की मछलियों के संरक्षण और बहाली के लिए 8.4 लाख आईएमसी अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया।
- कुल 60 संख्या में हिल्सा फरक्का में पाले गए थे जिनमें से 3 मछलियों को प्रवासन अध्ययन के लिए टैग किया गया था। हिलसा का अधिकतम और न्यूनतम वजन क्रमशः 182 ग्राम और 16 ग्राम पाया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान ने दिनांक 27 अप्रैल, 2023 को सेंट पीटर्सबर्ग के छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया। इसमें जोसेफ कॉलेज, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल 36 छात्रों को विभिन्न अनुसंधान सुविधाओं और प्रयोगशालाओं का प्रदर्शन किया गया और उन्हें मत्स्य पालन क्षेत्र में उच्च अध्ययन और भावी आजीविका के साधन और अवसरों के बारे में भी बताया गया।

अन्य

- सिफरी ने बैरकपुर में सुंदरबन ड्रीम्स के सहयोग से दिनांक 29 अप्रैल 2023 को क्षमता निर्माण और आजीविका वृद्धि के लिए एफपीओ/एफपीसी बैठक का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 42 एफपीओ ने भाग लिया।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

दस अंगुलियां "हिन्दी दैनिक"

संत रविदास घाट से गंगा में छोड़ी गई दो लाख मछलियां

वाराणसी। नमामि गंगे योजना के सौजन्य से राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के तहत मंगलवार को गंगा मे मछलियो के संरक्षण और संवर्धन के लिए केंद्रीय अंतरस्थली मत्स्यकी अनुसंधान संस्थान सिफरी के द्वारा संत रविदास घाट पर दो लाख मछलियां छोड़ी गई। विदित हो कि नमामि गंगे योजना के तहत गंगा की स्वच्छता और भूगर्भ जल के संरक्षण के लिए समग्र प्रयास किए जा रहे हैं।

ये भी उसी का एक हिस्सा है। योजना के क्रियान्वयन से स्थानीय मछलियो के प्रजाति के जर्म–पलाज्म का पुनर्स्थापन तथा जैव विविधता का संतुलन एवं संरक्षण हो सकेगा तथा प्रति इकाई क्षेत्रफल में मत्स्य उत्पादन में अभिवृद्धि से जीविकोपार्जन हेतु शिकारमाही पर निर्भर मछुआरो की आय बढ़ोतरी होगी तथा उनके जीवन स्तर मे सुधार होगा। संत रवि दास घाट पर गंगा नदी मे 200000 (दो लाख) भारतीय प्रमुख कार्प–कतला, रोहू, मृगल मछलियो के बीज को रैंचिंग सह जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया। अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ बि० के० दास ने उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए गंगा नदी मे मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। उन्होने कहा कि इस वर्ष गंगा नदी मे कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियो के 22 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग होना रखा गया है। कार्यक्रम के अतिविशिष्ट अतिथि डॉ० बी पी मोहंती अतिरिक्त महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), आईसीएआर, नई दिल्ली ने कहा कि गंगा की अविरलता और निर्मलता बनाए रखने के लिए सभी जन का सहयोग जरूरी है। बताया कि गंगा मे प्रदूषण को नियंत्रित करने और नदी का इको सिस्टम बरकरार रखने के लिए रिवर रांचिंग प्रोसेस का भी प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रक्रिया मे गंगा मे अलग–अलग प्रजाति की मछलियां छोड़ी जाती है। यह मछलियां नाइट्रोजन की अधिकता बढ़ाने वाले कारको को नष्ट करती है। ये मछलियां गंगा की गंदगी को तो समाप्त करती है। साथ ही जलीय जंतुओ के लिए भी हितकारी होती है। नमामि गंगे (गंगा विचार मंच) के प्रांत सह संयोजक राजेश शुक्ला ने कहा कि स्थानीय मछुआरो की आजीविका बढ़ाने मे यह योजना मददगार साबित हो रही है। मछली की संख्या मे इजाफा होने से नदी की स्वच्छता को बनाए रखने मे मदद मिलेगी। पतित पावनी गंगा की अविरल धारा को स्वच्छ बनाने की जरूरत है ताकि मां गंगा के अस्तित्व को बचाया जा सके।। इस अवसर अनिल कुमार, मत्स्य उप निदेशक, उ प्र, गंगा टास्क फोर्स से लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील गुहानी, सुबेदार शिवेंद्र सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो.राधा चौबे व जंतु विज्ञान विभाग के छात्र–छात्राएं, शिवदत्त द्विवेदी, पुष्पलता वर्मा, गंगा प्रहरी दर्शन निषाद उपस्थित रहे कार्यक्रम के प्रारंभ मे फिसरी के केंद्र प्रभारी डॉ धर्म नाथ झा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम मे आस–पास गाव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागो ने भाग लिया। अन्त मे संस्थान के वैज्ञानिका डा० वी आर ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया, डॉ मितेश रामटेक, डॉ विकास कुमार, डॉ जितेन्द्र कुमार एवं अन्य अधिकारियो और शोधार्थीयो की सहभागिता रही।

दस अंगुलियां
28 वर्षो से आपको समर्पित!
मुल्तानी है कि ये

केंदीय मंत्री ने गंगा में छोड़ी मछलियां, लाइफ जैकेट व जाल का किया वितरण

संथाल हूल एक्सप्रेस संवाददाता।

साहिबगंज: दी झारखंड ईस्टर्न गंजेटिक फिशर मैंस कॉपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड के तत्वाधान में मत्स्य अनुसंधान केंद्र बैरकपुर कोलकाता ने नमामि गंगे अभियान के तहत बुधवार को रेन्चिंग कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय बंदरगाह जहाजरानी और जलमार्ग राज्य मंत्री शांतनु ठाकुर जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में उपायुक्त रामनिवास यादव शामिल हुए। इस दौरान अतिथियों ने गंगा नदी में रेहू, कतला व मृगल मछली छोड़ा। मंत्री ने कहा कि इस योजना से गंगा नदी में मछलियों की संख्या में इजाफा होगा। साथ ही नदी का इको सिस्टम भी बरकरार रहेगा। लोगों को रोजगार मिलेगा। अनुसंधान केंद्र के डायरेक्टर बीके दास ने बताया कि इस वर्ष फरक्का से यूपी तक गंगा में 25 लाख मछली छोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। रेन्चिंग कार्यक्रम से गंगा में मछलियों की संख्या में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। मंत्री ने अनुसंधान केंद्र की ओर से दिए गए 10 जाल व 15 लाइफ जैकेट मछुआ सोसाइटी के अध्यक्ष अशोक चौधरी को सौंपा। मौके पर डीएफओ मनीष तिवारी, डीटीओ सन्तोष गर्ग, मछुआ सोसाइटी के उपाध्यक्ष छोटे लाल चौधरी, मंत्री राजीव चौधरी, भाजपा जिला अध्यक्ष रामदरश यादव, रामानंद साह व अन्य मौजूद थे।

गंगा में छोड़ी गयीं दो लाख 12 हजार मछलि

वाराणसी (एसएनबी)। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के अंतर्गत गंगा नदी में मछलियों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) द्वारा जन जागरूकता सह रैंचिंग कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके तहत बुधवार को संत रविदास घाट पर 2 लाख 12 हजार मछलियों के बच्चे छोड़े गये। इसमें भारतीय प्रमुख कार्प-कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग सह जन-जागरूकता कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया। एनएमसीजी के कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ. बीके दास ने गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष गंगा में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के 22 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग होने का लक्ष्य है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बीपी मोहंती, अतिरिक्त महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), आईसीएआर, नई दिल्ली ने लोगों को गंगा के महत्व को बताया तथा इसे स्वच्छ रखने का आवाह्न किया। अनिल कुमार, मत्स्य उप निदेशक, उप्र ने मत्स्य योजनाओं की जानकारी के साथ मछलियों के बारे में बताया। इस अवसर पर बीएचयू के प्रो. राधा चौबे, मत्स्य निरीक्षक राजेंद्र कुमार, गंगा टास्क फोर्स के सूबेदार सीवेंद्र सिंह, नमामि गंगे के राजेश शुक्ला ... विविधता और मछलियों के बारे ... किया तथा गंगा को स्वच्छ रख... कहा। कार्यक्रम में मत्स्य पाल... व्यवसायी तथा स्थानीय लागों ने ... इस अवसर पर वैज्ञानिक डॉ. वीअ... धन्यवाद किया। डॉ. मितेश रा... विकास कुमार, डॉ. जितेन्द्र कुमा... अधिकारियों और शोधार्थियों ने वि...

इस वर्ष कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के 22 लाख से ज्यादा बीज के रैंचिंग का लक्ष्य

দুরন্ত বার্তা

সিফরি,ব্যারাকপুরে এফ পি সি সভা আয়োজিত হলো

দুরন্ত বার্তা, কলকাতা, ২৯ এপ্রিল ঃ একদল কৃষক যারা কৃষি উৎপাদন এবং সংশ্লিষ্ট কার্যকলাপেপ সাথে জড়িত এবং কৃষি ব্যবসা পরিচালনার প্রতি একই দর্শন রয়েছে তারা কোম্পানি তৈরী করে যা ফপিসি নাম পরিচিত। এই গোষ্টিটি একটি একক গ্রামের কৃষক বা কয়েকটি গ্রামের কৃষকদের নিয়ে গঠিত হতে পারে। এফপিসি -র মূল উদ্দেশ্য হল একটি কোম্পানি হিসাবে নিবন্ধনকরে কৃষি ব্যবসা সংগছিত করা।দেশেরপূর্বাঞ্চলে কর্মরত একটি সক্রিয় এমজিও সুন্দরবন ড্রিমদের সহযোগিতায় ২৯ এপ্রিল২০২৩তারিখে সিআইএফ আরআই, ব্যারাকপুরে একটি এফপিসিমিট আয়োজন করা হয়েছিল। সভার উদ্দেশ্য ছিল মৎস্য চায়ের মাধ্যমে জীবিকা বৃদ্ধিতে এফপিসি সদস্যের সক্ষমতা বৃদ্ধি করা। উদ্বোধনী অধিবেশনের মাধ্যমে শুরু হওয়া পুরো দিনের কর্মসূচি ছিল তিনটি কারিগরী অধিবেশন আয় সৃষ্টির জন্য ম্যাস্যসম্পদ, এফপিসি-র জন্য বিপণন এবং আর্থিক কৌশল এবং এফপিসি-র উন্নয়নএবংপর্যবেক্ষণ।

मासिक शुल्क 250 रुपया से को शुल्क जमा करना होगा। लगाया गया है। हड़ताल पर जाएगी। किया

गंगा में मछली छोड़ने का कार्यक्रम काफी इनोवेटिक ओर ग्रेट, गंगा का बैलेंस मछली रखेगा : मंत्री

प्रात: आवाज

साहिबगंज : केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता एवं नमामि गंगे ने राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम के तहत बुधवार को ओझा टोली, पुरानी साहिबगंज गंगा घाट पर भारत सरकार के पोर्ट, शिपिंग, एवं जलमार्ग राज्य मंत्री शान्तनु ठाकुर सहित अन्य ने करीब साठ हजार मछलियों जिसमे रेहू कतला सहित अन्य प्रजाति के मछलियों के बीज को गंगा नदी में छोड़ा। कार्यक्रम का उद्देश्य गंगा नदी की जैव विविधता को बनाये रखना एवं मछुआरों के बेहतर जीवीकोपार्जन की उचित दिशा देना है। मछलियां गंगा में बढ़ते प्रदुषण को कम करने में और नादिये पारिस्थितिकी को बनाये रखने में सहायक है। वही मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि गंगा में मछ्ली छोड़ने का कार्यक्रम काफी इनोवेटिक ओर ग्रेट, गंगा का बैलेंस मछ्ली रखेगा। गंगा में प्रदूषण नही होगा। वही कार्यक्रम से पूर्व अतिथियों का स्वागत बुके देकर किया। वही आईसीएआर सिफरी के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। वही मुख्य अतिथि मंत्री श्री ठाकुर ने समिती सदस्य को लाइव जैकेट दिया। मौके पर डीसी रामनिवास यादव, वन प्रमंडल पदाधिकारी मनीष तिवारी, भारतीय अंतदेर्शीय जलमार्ग प्राधिकरण के सहायक निदेशक संजीव कुमार, दी झारखंड ईस्टर्न गंजेटिक फिशरमैन कॉपरेटिव सोसाइटी के अध्यक्ष अशोक चौधरी, भाजपा जिलाध्यक्ष रामदरश यादव, नप उपाध्यक्ष रामानंद साह, धर्मेंद्र कुमार सहित अन्य थे।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है